ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.20, No.2, April-June, 2025/22

मध्यम वर्गीय कार्यशील महिलाओं में भूमिका द्वन्द का समाजशास्त्रीय अध्ययन

अमूल्य कुमार सिंह एवं सविता

https://doi.org/ 10.61410/had.v20i2.236

सारांश : प्रस्तुत शोध अध्ययन ''मध्यम वर्गीय कार्यशील महिलाओं में भूमिका द्वन्द का समाजशास्त्रीय अध्ययन'' है। मध्यमवर्गीय कार्यशील महिलाओं को एक साथ कई भूमिकाएँ निभानी पड़ती हैं–पत्नी, माता, गृहिणी, कर्मचारी, बहू आदि। इन विविध भूमिकाओं के बीच जब अपेक्षाएँ परस्पर विरोधी हो जाती हैं, तो 'भूमिका द्वंद्व' की स्थिति उत्पन्न होती है। इस द्वंद्व का प्रभाव महिला के मानसिक, सामाजिक और पारिवारिक जीवन पर स्पष्ट रूप से पड़ता है। मध्यमवर्गीय कार्यशील महिलाओं में भूमिका द्वंद्व एक बहुआयामी सामाजिक समस्या है। यह केवल कार्यस्थल की बात नहीं है, बल्कि घरेलू अपेक्षाएं, सामाजिक मान्यताएं और आर्थिक दबाव सभी मिलकर इस द्वंद्व को गहराते हैं। अध्ययन से यह भी ज्ञात होता है कि समाधान केवल महिला के स्तर पर नहीं, बल्कि पूरे सामाजिक परिवेश में परिवर्तन द्वारा ही संभव है।''मध्यमवर्गीय कार्यशील महिलाओं में भूमिका द्वंद्व का समाजशास्त्रीय अध्ययन'' विषयक यह शोध प्रस्ताव इस दिशा में एक सार्थक प्रयास है, जो न केवल महिला–जीवन के यथार्थ को उभारने का कार्य करेगा, बल्कि एक समावेशी और संवेदनशील सामाजिक ढांचे के निर्माण में भी सहायक सिद्ध होगा।

महत्वपूर्ण शब्द : *मध्यम वर्गीय, कार्यशील महिलाएं, द्वन्द*

प्रस्तावना :–

भारतीय समाज में महिलाओं की भूमिका एक जटिल और बहुआयामी विषय रहा है। विशेषतः मध्यमवर्गीय कार्यशील महिलाओं की स्थिति, आधुनिकता और परंपरा के बीच संतुलन बनाए रखने के प्रयास में विविध सामाजिक दबावों और मानसिक तनावों से जुड़ी होती है। कार्यस्थल पर व्यावसायिक अपेक्षाएं और परिवार में पारंपरिक दायित्व। इन दोनों भूमिकाओं के बीच महिलाओं को निरंतर सामंजस्य बैठाना पड़ता है। यह भूमिका–द्वंद्व (Role Conflict) एक प्रमुख सामाजिक विषय के रूप में उभर कर सामने आया है, विशेष रूप से उन महिलाओं में जो आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होते हुए भी पारिवारिक जिम्मेदारियों से मुक्त नहीं हैं।

समाज में महिलाओं की भूमिका सदैव बहुआयामी रही है। विशेष रूप से मध्यमवर्गीय कार्यशील महिलाएं आज जिस द्वंद्व से गुजर रही हैं, वह केवल एक व्यक्तिगत संघर्ष नहीं, अपितु एक सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक परिवर्तन का संकेतक है। 'भूमिका द्वंद्व' (Role Conflict) एक ऐसी स्थिति है जिसमें व्यक्ति को एक से अधिक भूमिकाओं को निभाना होता है, किंतु उन भूमिकाओं के अपेक्षित कर्तव्य और उत्तरदायित्व आपस में टकराते हैं। कार्यशील मध्यमवर्गीय महिलाएं जब घरेलू और व्यावसायिक भूमिकाओं के मध्य संतुलन बनाने का प्रयास करती हैं, तब यह द्वंद्व उभरता है।

- **शोध निर्देशक , प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, का0एस0 साकेत पी0जी0 कॉलेज, अयोध्या (उ0प्र0)**
- **शोध छात्रा (समाजशास्त्र), डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विष्वविद्यालय,अयोध्या (उ0प्र0)**

भूमिका द्वंद्व की अवधारणा :–

'भूमिका द्वंद्व' का अर्थ है–किसी व्यक्ति के सामने एक ही समय में एकाधिक भूमिकाओं को निर्वाह करने की स्थिति उत्पन्न होना, जिनके मध्य सामंजस्य स्थापित करना कठिन होता है। यह द्वंद्व मानसिक तनाव, पारिवारिक कलह, कार्य–क्षमता में कमी और आत्म–संदेह जैसी समस्याएं उत्पन्न करता है। मध्यमवर्गीय महिलाओं में यह द्वंद्व इसलिए अधिक स्पष्ट होता है क्योंकि यह वर्ग आधुनिकता और परंपरा के बीच की कड़ी है। इनके पास आर्थिक स्वतंत्रता की आकांक्षा तो होती है, पर पारंपरिक सामाजिक अपेक्षाएं भी इन पर उतनी ही तीव्रता से लदी होती हैं।

समाजशास्त्र में 'भूमिका द्वंद्व' उस स्थिति को कहा जाता है जब किसी व्यक्ति से एक ही समय में विभिन्न भूमिकाओं के निर्वहन की अपेक्षा की जाती है, और वे भूमिकाएँ आपस में टकराती हैं या एक–दूसरे के अनुरूप नहीं होतीं। मध्यमवर्गीय महिलाओं के लिए यह द्वंद्व विशेष रूप से गहन होता है क्योंकि वे घर और बाहर दोनों मोर्चों पर स्वयं को सिद्ध करने की कोशिश करती हैं। इस प्रक्रिया में वे शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक तनाव का अनुभव करती हैं, जो उनके व्यक्तित्व और पारिवारिक–सामाजिक संबंधों पर प्रभाव डालता है। प्रस्तुत अध्ययन संरचनात्मक कार्यात्मकवाद (Structural Functionalism), प्रतीकात्मक अन्तःक्रिया सिद्धांत (Symbolic Interactionism) और संघर्ष सिद्धांत (Conflict Theory) जैसे समाजशास्त्रीय दृष्टिकोणों के माध्यम से भूमिका द्वंद्व के सामाजिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक पहलुओं की विवेचना करता है।

भूमिका द्वंद्व का महत्त्व :–

1. परिवारिक संरचना में परिवर्तन लाने में सहायक –

मध्यमवर्गीय महिलाएं जब कार्यस्थल पर जाती हैं, तो घर की पारंपरिक भूमिका में परिवर्तन आता है। पति–पत्नी के बीच समान उत्तरदायित्वों की भावना उत्पन्न होती है। पितृसत्तात्मक सोच में धीरे–धीरे बदलाव आने लगता है।

2. आर्थिक स्वावलंबन का आधार –

कार्यरत महिला परिवार की आर्थिक स्थिति को मजबूत करती है। वह निर्णय लेने की प्रक्रिया में भागीदारी करती है और अपनी पहचान स्थापित करती है।

3. लैंगिक समानता की दिशा में प्रभावी कदम–

द्वंद्व महिलाओं को अपनी सीमाओं से बाहर निकलने के लिए प्रेरित करता है। जब वे चुनौतियों का सामना करती हैं, तो यह स्पष्ट संदेश समाज को देता है कि महिलाएं पुरुषों के समान सक्षम हैं।

4. मानसिक दृढ़ता और आत्मबल का विकास –

इस द्वंद्व के बीच जीने वाली महिलाएं भावनात्मक रूप से मजबूत होती हैं। वे मानसिक दबाव के बावजूद स्वयं को संभालती हैं, जिससे उनका आत्मविश्वास और मानसिक दृढ़ता बढ़ती है।

भूमिका द्वंद्व की आवश्यकता :–

हालाँकि द्वंद्व को सामान्यतः एक नकारात्मक स्थिति माना जाता है, परंतु सामाजिक परिवर्तन की दृष्टि से यह अत्यंत आवश्यक और उपयोगी है–

1- सामाजिक जागरूकता का माध्यम– जब महिलाएं भूमिकाओं के बीच संघर्ष करती हैं, तो यह समाज को उनके योगदान और चुनौतियों के प्रति जागरूक करता है।
2- व्यक्तित्व विकास में सहायक– यह द्वंद्व महिला को आत्मविश्लेषण, निर्णय लेने और समय प्रबंधन जैसी क्षमताओं को विकसित करने में सहायक होता है।
3- नवीन सामाजिक संरचना का जन्मदाता– यह द्वंद्व समाज को नई जीवनशैली अपनाने, लिंग समानता की ओर अग्रसर होने और महिलाओं की भूमिका के पुनर्निर्धारण की प्रेरणा देता है।
4- परिवर्तन की चेतना का वाहक– जब महिलाएं अपने द्वंद्व के समाधान हेतु प्रयत्नशील होती हैं, तब वे केवल अपने लिए ही नहीं, सम्पूर्ण नारी समुदाय के लिए मार्ग प्रशस्त करती हैं।

अध्ययन की आवष्यकता एवं महत्व :–

भारत जैसे विकासशील राष्ट्र में जहाँ परंपरागत परिवार प्रणाली और सामाजिक संरचना अभी भी प्रबल है, वहाँ कार्यशील महिलाओं की स्थिति में गत दो दशकों में तीव्र परिवर्तन देखने को मिला है। आधुनिक शिक्षा, आर्थिक आवश्यकताओं और महिला सशक्तिकरण की लहर ने महिलाओं को कार्यक्षेत्र में भागीदारी के लिए प्रेरित किया है। परंतु, इन परिवर्तनों के बीच महिलाओं को पारिवारिक भूमिकाओं–जैसे माँ, पत्नी, बहू आदिकृके निर्वहन में भी समान दक्षता और समर्पण की अपेक्षा की जाती है। यह द्वैध अपेक्षा ही भूमिका द्वंद्व का कारण बनती है। मध्यमवर्गीय कार्यशील महिलाओं में भूमिका द्वंद्व के कारण उनके स्वास्थ्य, आत्म–विश्वास, वैवाहिक संबंध, बच्चों के प्रति उत्तरदायित्व तथा सामाजिक सहभागिता में किस प्रकार के परिवर्तन होते हैंकृयह समझना न केवल एक अकादमिक आवश्यकता है, बल्कि नीति–निर्धारण और महिला कल्याण की योजनाओं के निर्माण हेतु भी आवश्यक है।

प्रस्तुत अध्ययन की परिसीमांकन :–

कानपुर उत्तर प्रदेश का एक प्रमुख औद्योगिक एवं शैक्षिक केंद्र है। यहाँ मध्यमवर्गीय परिवारों की संख्या अत्यधिक है और इन परिवारों की महिलाएँ शिक्षा प्राप्त कर विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत हैं जैसे शिक्षण, बैंकिंग, निजी क्षेत्र, स्वास्थ्य सेवा आदि। इसी संदर्भ में कानपुर नगर शोध के लिए उपयुक्त क्षेत्र बनता है, क्योंकि यहाँ कार्यशील मध्यमवर्गीय महिलाओं की पर्याप्त संख्या उपलब्ध है जो भूमिका द्वंद्व के अनुभवों से गुजर रही हैं। अतः प्रस्तुत अध्ययन भारत वर्ष के उत्तर प्रदेश राज्य में से केवल एक जनपद **कानपुर नगर** को ही परिसीमांकन किया गया है।

पूर्व अनुसंधित उपलब्ध साहित्यों का पुनरावलोकन :–

कुमारी नीलम (2003) ने "कार्यशील महिलाओं में पारिवारिक एवं व्यावसायिक भूमिकाओं का द्वंद्व" के अध्ययन में 100 कार्यशील महिलाओं पर अध्ययन करते हुए यह निष्कर्ष निकाला कि महिला की उम्र, पारिवारिक सहयोग, एवं कार्यस्थल की सहूलियतें भूमिका द्वंद्व को प्रभावित करती हैं। **डॉ. रेखा मिश्रा (2007)** ने "मध्यमवर्गीय शिक्षिकाओं में भूमिका तनाव का समाजशास्त्रीय अध्ययन" करके शिक्षिका के रूप में कार्यरत महिलाओं को घरेलू कार्य और शैक्षणिक उत्तरदायित्वों के बीच संतुलन स्थापित

करना कठिन प्रतीत होता है, विशेषकर तब जब पारिवारिक अपेक्षाएँ अधिक हों। **डॉ. सीमा गुप्ता (2010)** ने "नवीन उदारीकरण के दौर में महिलाओं का सामाजिक द्वंद्व" के अध्ययन में पाया कि आर्थिक स्वतंत्रता के बाद महिलाओं में आत्मनिर्भरता तो आई, परन्तु उससे सामाजिक भूमिकाओं में टकराव भी बढ़ा है। **डॉ. कविता अग्रवाल (2011)** अध्ययनरू "द्वंद्व और संतुलन : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण" के अध्ययन में मुख्य निष्कर्ष पाया गया कि महिलाओं के लिए 'टाइम मैनेजमेंट' और 'इमोशनल इंटेलिजेंस' की कमी भूमिका द्वंद्व को बढ़ाती है। **रश्मि श्रीवास्तव (2012)** ने "कानपुर नगर की कार्यशील महिलाओं का सामाजिक अध्ययन" में पाया कि कानपुर के शहरी मध्यवर्गीय परिवारों में कार्यशील महिलाओं को पारिवारिक सहयोग का अभाव प्रमुख कारण है भूमिका द्वंद्व का। कुमारी नीलम (2003)"कार्यशील महिलाओं में पारिवारिक एवं व्यावसायिक भूमिकाओं का द्वंद्व" ने 100 कार्यशील महिलाओं पर अध्ययन करते हुए यह निष्कर्ष निकाला कि महिला की उम्र, पारिवारिक सहयोग, एवं कार्यस्थल की सहूलियतें भूमिका द्वंद्व को प्रभावित करती हैं। **डॉ. रेखा मिश्रा (2007)** ने "मध्यमवर्गीय शिक्षिकाओं में भूमिका तनाव का समाजशास्त्रीय अध्ययन"किया। जिसमें पाया गया कि शिक्षिका के रूप में कार्यरत महिलाओं को घरेलू कार्य और शैक्षणिक उत्तरदायित्वों के बीच संतुलन स्थापित करना कठिन प्रतीत होता है, विशेषकर तब जब पारिवारिक अपेक्षाएँ अधिक हों। **डॉ. सीमा गुप्ता (2010)** ने "नवीन उदारीकरण के दौर में महिलाओं का सामाजिक द्वंद्व" के अध्ययन में पाया गया कि आर्थिक स्वतंत्रता के बाद महिलाओं में आत्मनिर्भरता तो आई, परन्तु उससे सामाजिक भूमिकाओं में टकराव भी बढ़ा है। **डॉ. कविता अग्रवाल (2011)** ने "द्वंद्व और संतुलनरू एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण" के अध्ययन में पाया कि महिलाओं के लिए 'टाइम मैनेजमेंट' और 'इमोशनल इंटेलिजेंस' की कमी भूमिका द्वंद्व को बढ़ाती है। **रश्मि श्रीवास्तव (2012)** ने "कानपुर नगर की कार्यशील महिलाओं का सामाजिक अध्ययन" के अध्ययन में पाया कि कानपुर के शहरी मध्यवर्गीय परिवारों में कार्यशील महिलाओं को पारिवारिक सहयोग का अभाव प्रमुख कारण है भूमिका द्वंद्व का। **डॉ0 अंजलि राव (2013)** "महिला सशक्तिकरण और भूमिका संघर्ष" में पाया गया कि सशक्तिकरण के साथ महिलाओं पर सामाजिक अपेक्षाएं भी बढ़ीं, जिससे तनाव और द्वंद्व बढ़े। **डॉ. उमा चौहान (2015)** ने "कार्य–जीवन संतुलन और मध्यमवर्गीय महिलाएं" के अध्ययन में पाया गया कि जीवन में कार्य और परिवार के बीच संतुलन की अनुपस्थिति कार्यशील महिलाओं में अवसाद, चिंता और आत्मग्लानि की स्थिति उत्पन्न करती है। **डॉ. मंजू सिंह (2016)**ने "महिलाओं की दोहरी भूमिका'' एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन" मे पाया गया कि कार्यस्थल की अपेक्षाएं और घरेलू दायित्वों के बीच मानसिक तनाव की स्थिति स्पष्ट देखी गई। **डॉ. संध्या जोशी (2018)** ने "बदलते सामाजिक परिवेश में महिला की भूमिका" के अध्ययन में भूमिकाओं की जटिलता और बदलते मूल्य प्रणाली ने महिलाओं की पारंपरिक भूमिका को चुनौती दी है। **प्रो. आर.सी. मिश्रा (2020)** ने "भारतीय समाज में भूमिका द्वंद्व और महिला" के अध्ययन में मुख्य निष्कर्ष के रूप में पाया कि भारत में सामाजिक संरचना अभी भी पुरुष प्रधान है, जिससे महिलाओं को अपनी बहु–भूमिकाओं में संतुलन स्थापित करने में कठिनाई होती है।

उपसंहार :–

वर्तमान समय में जब महिलाओं की भागीदारी समाज के प्रत्येक क्षेत्र में बढ़ रही है, तब उनके आंतरिक संघर्षों को समझना न केवल एक समाजशास्त्रीय उत्तरदायित्व है बल्कि सामाजिक न्याय की दिशा में एक कदम भी है। ''मध्यमवर्गीय कार्यशील महिलाओं में भूमिका द्वंद्व का समाजशास्त्रीय अध्ययन'' विषयक यह शोध प्रस्ताव इस दिशा में एक सार्थक प्रयास है, जो न केवल महिला–जीवन के

यथार्थ को उभारने का कार्य करेगा, बल्कि एक समावेशी और संवेदनशील सामाजिक ढांचे के निर्माण में भी सहायक सिद्ध होगा।

परिणाम :–

प्रस्तुत अध्ययन से ज्ञात होता है कि मध्यमवर्गीय कार्यशील महिलाओं में भूमिका द्वंद्व न केवल एक सामाजिक यथार्थ है, अपितु परिवर्तन की भूमिका निभाने वाला एक माध्यम भी है। यह द्वंद्व जहां महिला को मानसिक और शारीरिक रूप से चुनौती देता है, वहीं उसे सशक्त और आत्मनिर्भर भी बनाता है। इसके प्रति समाज, परिवार और संस्थाओं का दृष्टिकोण सकारात्मक होगा, तभी यह द्वंद्व एक नई सामाजिक संरचना की नींव बन सकेगा। अतः इस द्वंद्व की आवश्यकता और महत्त्व को समझते हुए, महिलाओं के लिए एक संवेदनशील और सहयोगी वातावरण का निर्माण अति आवश्यक है।

सन्दर्भ :

- देवी, सुमित्रा (2012)–भारतीय समाज में महिला की भूमिका, नई दिल्ली, रावत पब्लिकेशन. ISBN: 978-81-316-0472-6.
- शुक्ला, रेखा (2015)–कार्यशील महिलाएं और पारिवारिक तनाव, प्रयागराज, वाणी प्रकाशन. ISBN: 978-93-5000-122-3.
- **Agarwal, Kavita. (2011).** *Role Conflict and Balance among Working Women*. Jaipur: Rawat Publications.
- **Chauhan, Uma. (2015).** *Work-Life Balance among Middle-Class Women*. Lucknow University.
- **Connell, R. W. (2005)** – *Masculinities* (Second Edition)। Cambridge: Polity Press। ISBN: 978-0-7456-3379-8.
- **Goode, William J. (1960)** – *A Theory of Role Strain*। *American Sociological Review*, Vol. 25, No. 4, pp. 483–496.
- **Government of India (2019)** – *Periodic Labour Force Survey (PLFS), Annual Report 2018-19*.New Delhi Ministry of Statistics and Programme Implementation.: MOSPI/PLFS/2019/07.
- **Gupta, Seema. (2010).** *Social Conflict of Women in the Era of Liberalization*. Delhi: Gyan Books.
- **Joshi, Sandhya. (2018).** *Changing Social Context and Women's Role*. IGNOU Research Journal.

- **Mishra, Rekha. (2007).** *Sociological Study of Role Stress among Middle-Class Teachers*. Kanpur University.
- **Mishra, R.C. (2020).** *Role Conflict and Women in Indian Society*. JNU, Delhi.
- **Neelam, Kumari. (2003).** *Role Conflict among Working Women*. BHU, Varanasi.
- **Oakley, Ann (1974)** – *The Sociology of Housework*। London: Martin Robertson Press। ISBN: 978-0-7556-1506-7.
- **Rao, Anjali. (2013).** *Women Empowerment and Role Conflict*. Mumbai University.
- **Sen, Amartya (1999)** – *Development as Freedom*.Oxford University press. ISBN: 978-0-19-829758-1.
- **Singh, Manju. (2016).** *Dual Role of Women: A Psychological Perspective*. Agra University.
- **Srivastava, Rashmi. (2012**). *A Sociological Study of Working Women in Kanpur*. Ph.D. Thesis, CSJM University.
- **UN Women (2020)** – *Women in the Changing World of Work: Facts and Figures*।प्रकाशन क्रमांक: UNW/WCWW/2020/EN.